अंकुर

हिन्दी

कक्षा-2

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत पाठ्य-पुस्तकों का निःशुल्क वितरण ।

क्रय-विक्रय दण्डनीय अपराध ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

सर्व शिक्षा अभियान : **2017 - 18 -**

दो शब्द

बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए पाठ्यपुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों के लिए सार्थक, सृजनात्मक एवं सहज हों। हमें यह समझना होगा कि पाठ्सपुस्तकें, बच्चों को किसी निर्धारित ज्ञान तक ले जाने का माध्यम मात्र नहीं है, बल्कि उनके ज्ञान फलक एवं समझ को विस्तृत करने के लिए आरम्भिक सामग्री है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 और बिहार पाठ्यचर्या-2008 में बच्चों के रचनात्मक ज्ञान के विकास को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तकों के सृजनात्मक स्वरूप एवं भूमिका पर बल दिया गया है। इन दस्तावेजों के आलोक में, वर्ष 2009 में बिहार राज्य के विद्यालयी पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम को तैयार किया गया और फिर उसके आधार पर नवाचारी पाठ्यपुस्तकों के विकास का कार्य आरम्भ हुआ। हमारी मान्यता है कि पाठ्यपुस्तकों का निर्माण कोई एक बार का कार्य नहीं है बल्कि आधुनिक अवधारणाओं और अद्यतन शोधों के आधार पर इनकी निरन्तर समीक्षा एवं उतरोत्तर विकास होते रहना चाहिए, ताकि हमारे बच्चों के हाथों में उनके मन लायक उपयोगी पाठ्यपुस्तकें पहुँच सकें।

इसी क्रम में कक्षा-1 एवं 2 के लिए हिन्दी, अंग्रेजी और गणित के पाठ्यपुस्तकों को नए स्वरूप में विकसित किया गया है, जिसमें पठन-पाठन के लिए पाठों एवं वर्कशीट्स का समृद्ध समावेश है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम में वर्ष 2017 में हुए नवीनतम संशोधन के अंतर्गत अधिगम सम्प्राप्ति (लर्निंग आउटकम) को प्राप्त करने के दृष्टिकोण से इन पाठ्यपुस्तकों में पाठों एवं कक्षायी प्रक्रियाओं को विशेष तौर पर संरचित किया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों के विकास में राज्य शिक्षण शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार तथा अन्य संस्थाओं के विशेषज्ञों और यहाँ के शिक्षकों की सराहनीय भूमिका रही है, जिसके लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं।

हमें आशा है कि इन पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से कक्षा-1 और 2 के स्तर पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सुदृढ़ होगी। इन पाठ्यपुस्तकों पर छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी जिससे इसे और बेहतर बनाया जा सके।

(श्री संजय कुमार सिंह) भा॰प्र॰से॰

राज्य परियोजना निदेशक

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्

पटना।

दिशा बोध

श्री संजय कुमार सिंह (भा॰प्र॰से॰)
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद, पटना

डॉ. मनीष कुमार
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना

श्री राजीव रंजन प्रसाद
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद, पटना

डॉ॰ एस॰ए॰ मोईन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना

लेखक समूह

श्री सुमन कुमार सिंह, प्रखंड साधन सेवी, भगवानपुर हाट, सिवान।
श्री चन्दन कुमार पाण्डेय, प्रतिभा पल्लवन पब्लिक स्कूल, जहानाबाद।
सुश्री वर्षा कुमारी, सहायक शिक्षिका, रा० म० वि० रामपुर–31, मनेर, पटना।
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधन सेवी, हिलसा, नालंदा।
श्री आदित्य नाथ ठाकुर, सहायक शिक्षक, म० वि० माउण्ट एवरेस्ट, कंकड़बाग, पटना।
श्री जुनैद, सहायक शिक्षक, प्रा० वि० टोला परवेज खाँ, नगरा, सारण।
श्री मनीष रंजन, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, म० वि० चैनपुर, संपतचक, पटना।
श्री अजय कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, गोरखरी, बिक्रम, पटना।
श्री कात्यायन कुमार त्रिपाठी, प्रधान शिक्षक, प्रा० वि० चैलीटाल स्लम, पटना।
श्री अरूण कुमार, विद्याभवन सोसाइटी, पटना।
डॉ. चन्दन श्रीवास्तव, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

समन्वयक

डॉ. रीता राय, व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार, वर्ष 2009 में विद्यालयी शिक्षा के लिए नवीन पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया, जिसके आधार पर नवाचारी पाठ्यपुस्तकों के विकास की अपेक्षा की गई। इस संदर्भ में, पाठ्यपुस्तकों का विकास बालकेन्द्रित एवं समावेशी शिक्षा के नजरिए से करने का प्रयास किया गया। साथ ही, समय-समय पर, आवश्यकतानुसार पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा तथा उसके आधार पर उनका संशोधन-परिमार्जन भी किया जाता रहा है। अंततः पाठ्यपुस्तकों को मुद्रित करने का वृहत्त कार्य बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा अनवरत किया जाता है ताकि हमारे विद्यालयों में पढ़नेवाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराई जा सके।

इसी क्रम में कक्षा-1 एवं 2 के लिए राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार द्वारा हिन्दी, अंग्रेजी और गणित की पाठ्यपुस्तकों को नए परिमार्जित स्वरूप को प्रस्तुत किया जा रहा है। इन पाठ्यपुस्तकों के अंतर्गत, पाठों के साथ-साथ वर्कशीट्स को प्रचुरता में शामिल किया गया है, ताकि बच्चे उनपर काम करके अपने ज्ञान को पुख्ता कर सकें। इन पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार तथा अन्य भागीदार संस्थाओं एवं विशेषज्ञों का हम आभार व्यक्त करते हैं।

बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता को और उन्नत किया जा सके।

दिलीप कुमार, आई.टी.एस.
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

हिन्दी, कक्षा–2 के लिए सीखने–सिखाने सम्बंधी अपेक्षाएँ
(अधिगम परिणाम/लर्निंग आउटकम)

बच्चे –

- विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे– जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि।
- कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं।
- देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनायी जा रही सामग्री, जैसे– कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं।
- भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल का मज़ा लेते हुए लय और तुक वाले शब्द बनाते हैं, जैसे–एक था पहाड़, उसका भाई था दहाड़, दोनों गए खेलने ....।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/ सुनाते हैं/आगे बढ़ाते हैं।
- अपने स्तर और पसंद के अनुसार कहानी, कविता, चित्र, पोस्टर आदि को आनंद के साथ पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।
- चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।
- चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग–अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।
- परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे– चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर–ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।
- प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा को समझते हैं, जैसे– 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं?/ 'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन–कौन से अक्षर हैं?
- हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।
- स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं।
- स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अतंर्गत चित्रों, आड़ी–तिरछी रेखाओं (कीरम–काँटे), अक्षर–आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व–वर्तनी का उपयोग और स्व–नियंत्रित लेखन (कनवैंनशनल राइटिंग) करते हैं।
- सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह–तरह से चित्रों/शब्दों/वाक्यों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं।
- अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर आधारित अनभुवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं।
- अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि आगे बढ़ाते हैं।

कक्षा–2	अंकुर		हिन्दी
क्रम संख्या	पाठ	दिवस	दिन
1.	हँसते–खेलते	01–10	10
2.	चित्रपठन	11–13	03
3.	कौआ और लोमड़ी (चित्रपठन)	14–18	05
4.	नानी तेरी मोरनी (कविता)	19–24	05
5.	प्रभु मेरा जीवन हो सुंदर (प्रार्थना)	25–28	04
6.	पुनरावर्तन	29–31	03
7.	प्यासा कौआ (चित्रकथा)	32–37	06
8.	दो बकरियाँ (कहानी)	38–46	09
9.	बहुत हुआ (कविता)	47–52	06
10.	भालू ने खेली फुटबॉल (कहानी)	53–63	11
11.	पुनरावर्त्तन	64–67	05
12.	किसान, आलू और भालू (कहानी)	68–78	11
13.	अगर पेड़ भी चलते होते (कविता)	79–84	06
14.	हाँ जी हाँ, ना जी ना (कविता)	85–90	06
15.	पुनरावर्तन	91–98	08
16.	कितने कौए (कहानी)	99–107	08
17.	चूँ–चूँ की टोपी (एकांकी)	108–116	09
18.	मेला (कविता)	117–125	09
19.	निशा की चिट्ठी (पत्र)	126–134	09
20.	पुनरावर्तन	135–138	04
21.	होली (कविता)	139–147	09
22.	बंदर और टोपी (कहानी)	148–156	09
23.	पहेलियाँ (कविता)	157–164	08
24.	इच्छा (कविता)	165–173	09
25.	पुनरावर्तन	174–180	07